Indian J. Soc. & Pol. 06(01):73-76:2019 **ISSN: 2348-0084(P)**
ISSN: 2455-2127(O)

भारत के विकास के लिए प्रवासी भारतीयों का योगदान

ममता मणि त्रिपाठी[1]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र, श्री भगवान महावीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय फाजिलनगर,कुशीनगर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

प्रवासी भारतीय विश्व के लगभग 48 देशों में रह रहें हैं जिनकी जनसंख्या करीब 2 करोड़ है इनमें से 11 11 देशों में 5 लाख से ज्यादा प्रवासी भारतीय वहाँ की औसत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा वहाँ की राजनीतिक दशा एवं दिशा को तय करने मे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। प्रवासी भारतीयों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखने के कारण ही साझा पहचान मिली है। जहाँ–जहाँ प्रवासी भारतीय बसे हैं वहाँ उन्हें आर्थिक तंत्र को मजबूती प्रदान की है। उनकी सफलता का श्रेय उनकी परंपरागत सोच, सांस्कृतिक मूल्य तथा शैक्षणिक योग्यता को दिया जाता है। वैश्विक स्तर पर सूचना तकनीक के क्षेत्र में क्रांति से इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसके कारण भारत की विदेशों मे छवि निखरी है। प्रधानमंत्री मोदी ने प्रवासियों को भरोसा दिलाया कि हम प्रतिभा पलायन को प्रतिभा वापसी में बदलना चाहते हैं। विश्व बैंक के अनुसार भारत के प्रवासी ही सबसे ज्यादा विदेशी मुद्रा स्वदेश भेजते हैं। इस तरह से भारत के विकास में प्रवासियों का विशेष योगदान प्रस्तुत शोध पत्र में प्रवासी भारतीयों का भारत के विकास में योगदान पर प्रकाश डाला जायेगा।

KEYWORDS: *एनआरआई, आर्थिक विकास, विस्थापन, पलायन*

प्रवासी भारतीय आम तौर पर वे लोग हैं जो मौजूदा भारतीय गणराज्य की सीमाओं से किसी और जगह चले गए। इस समय NRI अनिवासी भारतीय नागरिक तथा PIO भारतीय मूल के लोगों से बने प्रवासी भारतीयों की संख्या बीस मिलियम से ज्यादा है और जिन्हें कुछ अन्य देशों की नागरिकता हासिल है। यह प्रवासी विश्व के लगभग सभी हिस्से में पाये जाते हैं। ग्यारह देशों मे से प्रत्येक मे एक मिलियन से ज्यादा प्रवासी भारतीय हैं जबकि 22 देशों मे से प्रत्येक में एक लाख प्रवासी भारतीय रहते हैं। यह प्रवासी विश्व के लगभग सभी हिस्से में पाये जाते हैं। 2001 में तात्कालिक प्रधानमंत्री के निर्देश पर भारत सरकार ने सांसद डॉ0एल0एम0सिंघवी की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति की स्थापना की थी ताकि प्रवासी भारतीयों की आशाओं और उम्मीदों उनकी समस्याओं और कठिनाइयों की गहराई से अध्ययन किया जा सके।

प्रवासी भारतीय विश्व के लगभग 48 देशों में रह रहें हैं जिनकी जनसंख्या करीब 2 करोड़ है इनमें से 11 11 देशों में 5 लाख से ज्यादा प्रवासी भारतीय वहाँ की औसत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा वहाँ की राजनीतिक दशा एवं दिशा को तय करने मे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। प्रवासी भारतीयों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखने के कारण ही साझा पहचान मिली है। जहाँ–जहाँ प्रवासी भारतीय बसे हैं वहाँ उन्हें आर्थिक तंत्र को मजबूती प्रदान की है। उनकी सफलता का श्रेय उनकी परंपरागत सोच, सांस्कृतिक मूल्य तथा शैक्षणिक योग्यता को दिया जाता है। वैश्विक स्तर पर सूचना तकनीक के क्षेत्र में क्रांति से इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसके कारण भारत की विदेशों मे छवि निखरी है। प्रधानमंत्री मोदी ने प्रवासियों को भरोसा दिलाया कि हम प्रतिभा पलायन को प्रतिभा वापसी में बदलना चाहते हैं। विश्व बैंक के अनुसार भारत के प्रवासी ही सबसे ज्यादा विदेशी मुद्रा स्वदेश भेजते हैं।

आज भारतीय मूल के दो करोड़ लोग विदेशों में रह रहे हैं इन लागों के पास भारतीय पासपोर्ट है और ये लोग लगभग 70 देशों में निवास कर रहे हैं। एक ओर फिजी, मारीशस, ट्रिनिडाड गिनी, सूरीनाम में भारतीय मूल के व्यक्तियों की संख्या मूल जनसंख्या के लगभग 40 प्रतिशत है वहीं अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, युगांडा, ब्रिटेन एवं कनाडा में वे छोटे व अल्पसंख्यक समुदाय के रुप में हैं। 9 जनवरी 1915 के दिन महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह आंदोलन के बाद भारत लौटे जहाँ उन्होंने औपनिवेशिक एवम् नस्लवादी सरकार का विरोध किया। वर्ष 2002 में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (NDA) की अटल बिहारी बाजपेयी सरकार ने इस दिन को प्रवासी भारतीय दिवस के रुप में मनाने का निर्णय किया। पूर्व राजनयिक के0सी0सिंह नें कहा है कि 2002 में संयुक्त अरब अमीरात में भारत के राजदूत के रुप में नियुक्ति के दौरान उन्हें एक प्रवासी भारतीय पुरूस्कार के लिए नाम सुझानें के लिए कहा। जिसमें वे स्वयम् को असक्षम पाते हैं क्योंकि कई योग्य प्रवासी में एक को चुनना कठिन व भेदभावकारी हो सकता है।

'प्रवासी' शब्द का प्रयोग 19वीं शदी में भारत से गए भारतीय प्रवासियों के लिए किया गया। मोटे तौर पर दो श्रेणियों

1: Corresponding Author

में विभाजित हैं– एक वे जो स्वतंत्रता के पूर्व गए तथा दूसरे वे जो स्वतंत्रता के बाद गये। जिनमें दूसरी श्रेणी वाले पुनः पश्चिम देशों में गए श्रमिक, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड में गए भारतीयों आदि श्रेणियों में विभक्त हैं। इनमें पश्चिमी एशियाई देशों में तेल कीमतों में आए उछाल के बाद लाभ के लिए जाने वाले भारतीय लगभग 7 मिलियन हैं। पिछली कई सदियों से प्रवासी भारतीयों का काफी योगदान है। दक्षिण अफ्रीका में गिरमिटिया मजदूरों के लिए किया गया महात्मा गाँधी का सत्याग्रह गदर पार्अी का आन्दोलन एवं सुभाष चन्द्र बोस का आजाद हिन्द फौज कुछ ऐसे उदाहरण हैं जहाँ प्रवासी भारतीयों ने देश की स्वतंत्रता में काफी योगदान दिया है।प्राचीन काल से ही हिन्दू व्यापारियों एवं बौद्ध भिक्षुओं नें व्यापार एवं धार्मिक उद्देश्यों के लिए विश्व के कई हिस्सों की यात्राएँ की। भारत में अंग्रेजों के आगमन एवं ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन 1833 में अफ्रीकी दासता कानून की समाप्ति के बाद से यह प्रवृत्ति तेजी से बदली। बिहार एवं मद्रास में गिरमिटिया मजदूरों को ब्रिटिश बागानों में काम करने के लिए नावों से अफ्रीका, कैरिबियाई प्रायद्वीप तथा दक्षिण एवं पूर्वी एशिया में बड़े प्रवासी समुदाय के रुप में उभरे हैं। दुनिया के कई हिस्सों में रहने वाले इन गिरमिटिया मजदूरों की संख्या एक करोड़ 30 लाख है।

सरकारी ऑकड़ों के अनुसार वर्तमान में दुनिया के लगभग 200 देशों में 3 करोड़ 80 लाख प्रवासी भारतीय हैं। आज भारत दुनिया का सबसे ज्यादा प्रवासी समुदाय वाला देश है ये प्रवासी आज अमेरिका, यूरोप, एशिया, पूर्वी एशिया, दक्षिण पूर्वी एशिया, अरब प्रायद्वीप, अफ्रीका महाद्वीप में फैले हुए हैं।

प्रवासी भारतीय समुदाय को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जाता है। पहला प्रवासी भारतीय NRI एवं दूसरा भारतीय मूल के लोग (PIO) । NRI ऐसे भारतीय हैं जो भारत में निवास नही करते जबकि PIO उन्हें कहा जाता है जिन्होंने दूसरे किसी देश की नागरिकता ग्रहण कर ली है। प्रवासी भारतीयों को भारत में जोड़ने तथा उनके संसाधनों एवं कौशल का भरपूर लाभ उठानें के लिए केन्द्र सरकार द्वारा सिंघवी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया है। वर्ष 2002 में पकाशित अपनी रिपोर्ट में समिति ने प्रवासी भारतीयों के लिए एक अलग से संगठन बनाने की बात कही। समिति की अनुशंसाओं को ध्यान में रखकर ही सरकार नें प्रवासियों से जुड़ने के लिए एक मंच के रुप में वर्ष 2003 से प्रवासी भारतीय दिवस मनाने का निर्णय लिया। 9 जनवरी 1915 को महातमा गाँधी की अफ्रीका से भारत वापसी के उपलक्ष में 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस का नाम दिया गया।

प्रवासी भारतीयों को भारत से जोड़ने का काम पहले भी हुआ है लेकिन इस मामले में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भूमिका उल्लेखनीय है। वह जिस भी देश में जाते हें वहाँ के प्रवासी भारतीयों के बीच अवश्य जाते हैं इससे जो अपनेपन की भावना जन्मती है उससे प्रवासी भारतीय भारत की ओर आकर्षित होते हैं। सरकार प्रवासी भारतीय के सहयोग से ब्रेन ड्रेन को ब्रेन गेन में बदलना चाहती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नें बेंगलूर में आयोजित 14वें प्रवासी भारतीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए प्रवासी भारतीयों के भमिका की सराहना की और कहा कि वे देश के प्रगति में सहयात्री हैं। उनके देश छोड़ कर जाने से प्रतिभा पलायन तो हुआ है मगर उनकी प्रतिभा को देश के विकास में उपयोग किया जायेगा। वेल्थन साइट रिपोर्ट 2016 के अनुसार विश्व भर में लगभग 1.6 करोड़ अनिवासी (Non Resident Indians NRI) हैं। इनमे से कइयों ने विदेशों में अप्रतिम उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

भारतीय मूल के लोगों तथा भारत के मध्य संबंध स्थापना, पारस्परिक विचार विनिमय को प्रोत्साहन देने तथा प्रवासी भारतीय समुदाय को भारत के सामाजिक–आर्थिक विकास से सम्बद्ध होने हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से प्रवासी भारतीय दिवस समागम की 14वीं कड़ी का आयोजन 7–9 जनवरी 2017 को बेंगलूरू कर्नाटक में किया गया। इस प्रवासी भारतीय दिवस का केन्द्रीय विषय था–प्रवासी भारतीय संबंधों के नए आयाम (Redefining Engagement with the Indian diaspara) 8 जनवरी 2017 को प्रधानमंत्री मोदी ने उद्घाटन के अवसर पर प्रवासी कौशल योजना को लांच किया एवं समागम के मुख्य अतिथि पुर्तगाल के डॉ एटोमियों कोस्टा भी थे।

6–7 जनवरी 2018 के मध्य आसियान भारतीय प्रवासी दिवस मरीना वै सेण्ट्रल एक्सपो एवं कन्वेशन सेण्टर सिंगापुर में आयोजित हुआ। इसका उद्देश्य भारतीय मूल के लोगों और भारत के लोगो के मध्य सम्बंध स्थापना, पारस्परिक विचार विनिमय को प्रोत्साहन देने तथा प्रवासी भारतीय समुदाय को भारत के सामाजिक आर्थिक विकास से सम्बद्ध होने हेतु प्रेरित करना है। इस समारोह की थीम प्राचीन मार्ग, नई यात्रा, गतिशील आसियान– भारत साझेदारी में डायस्पोरा (Ancient Rout, New Journey: Diaspora in the Dynamic Asean India Partership) इस सम्मेलन में भारत नें कहा कि आसियान क्षेत्र के साथ उसका सम्पर्क परस्पर सिद्धान्तों की स्पष्टता में निहित है और भारत यह मानता है कि जब सभी देश अंतर्राट्रीय नियमों का पालन करते हैं और सार्वभौम समानता एवं परस्पर सम्मान के आधार पर आचरण करते है तब सभी स्वयं को सुरक्षित महसूस करते हैं और हमारी अर्थव्यवस्थाएँ समृद्ध होती है। प्रवासी भारतीय केन्द्र में 9 जनवरी को प्रथम प्रवासी सांसद सम्मेलन का आयोजन किया गया, सम्मेलन में 23 देशों से आए 124 सांसदों, 17 मेयरों को प्रधानमंत्री ने सम्बोधित किया। 2017 के अंत में International organization for minority IOM द्वारा वैश्विक प्रवासन रिपोर्ट 2018 के नाम से जारी की गयी। विश्व प्रवासन रिपोर्ट के अनुसार विश्व मे विदेशों में जाने वाले प्रवासियों की संख्या के सन्दर्भ में भारत शीर्ष है। वर्तमान में लगभग 31.2 मिलियन प्रवासी भारतीय

विश्व के विभिन्न देशों में बसे हुए हैं। इनमे से 13.4 मिलियन व्यक्ति भारतीय मूल के हैं और 17.8 मिलियन अनिवासी भारतीय है। भारतीय प्रवासियों की अधिक जनसंख्या वर्ष 2000 के अनुसार 3.31 मिलियम संयुक्त अरब अमीरात में वास करती है जो विदेश मे रह रहे कुल भारतीयों का 22.4 प्रतिशत है। विश्व बैंक के अनुसार विश्व के विभिन्न देशों में बसे भारतीय सबसे अधिक विदेशी मुद्रा स्वदेश भेजते हैं। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार 2016 उन्होने 62 अरब डालर भारत भेजे जो देश की कुल GDP का लगभग 3.3 प्रतिशत है। हलाँकि यह राशि वर्ष 2015 के 68.7 अरब डालर से कम है लेकिन इसके बावजूद भारत चीन को पछाड़कर कई साल से शीर्ष पर बना हुआ है। इसी अवधि में चीन के लोगों ने 61 अरब डालर अपने देश भेजे जो उसकी कुल GDP का 0.6 प्रतिशत है।

6–7 जनवरी 2018 के मध्य आसियान भारतीय प्रवासी दिवस मरीना वै सेण्ट्रल एक्सपो एवं कन्वेशन सेण्टर सिंगापुर में आयोजित हुआ। इसका प्रमुख थीम Ancient Rout, New Journey: Diaspora in the Dynamic ASEAN India Partership था। प्रवासी भारतीय दिवस मनाने का उद्देश्य निम्नांकित है–

1. अप्रवासी भारतीयों की भारत के प्रति सोच उनकी भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ ही साथ उनकी अपनी देशवासियों के साथ सकारात्मक बातचीत के लिए मंच उपलब्ध कराना था।
2. भारतवासियों को अप्रवासी भारतीयों की उपलब्धि के बारे में बताना है।
3. युवा पीढ़ी को अप्रवासियों से जोड़ना।
4. भारत के प्रति अनिवासियों को आकर्षित करना।
5. निवेश के अवसर बढ़ाना है।

भारत सरकार प्रवासी भारतीय को अपनी सबसे बड़ी पूँजी मानते हुए इनकी सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है और इसके लिए अनेक नीतियाँ बनायी गई और पहल की गयी है। प्रवासन की प्रक्रिया को अधिक सुरक्षित, व्यवस्थित कानून सम्मत और मानवीय बनाने के लिए संस्थागत ढाँचे में सुधार की प्रक्रिया जारी है। भारत सरकार ने इसके लिए कौशल विकास कार्यक्रम शुरु किये हैं। विदेश जाकर नौकरी करने वालों के लिए देश भर में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय कौशल केन्द्र स्थापित किये गए हैं जहाँ उन्नत प्रशिक्षण तथा विदेशी भाषा में पाठ्यक्रम संचालित होते हैं।

आज हम प्रवासियों के उपलब्धियों पर चर्चा करें तो राजनीति के क्षेत्र में छेदी जगन, शरत जगदेव, वासुदेव पाण्डेय, रमला प्रसाद और महेन्द्र चौधरी जैसे नाम हें जिन्होंने अपने – अपने देश में सर्वोच्च राजनीतिक पदों को सुशोभित किया है। बॉबी जिन्दल, प्रीति पटेल जैसे अनेक नाम हैं जो भारतीय मूल के हैं। ये राजनेता अपने–अपने देशों में सर्वोच्च राजनीतिक पदों को सुशोभित किये हैं। मारीशस, मालदीव, दक्षिणी अफ्रीका, सिंगापुर, श्रीलंका की राजनीतिक और आर्थिक नीतियों में प्रवासी भारतीयों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आर्थिक विकास वाणिज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में प्रवासी भारतीय की भूमिका महत्वपूर्ण है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रवासी भारतीय स्वास्थ्य पेशेवर ब्रिटेन की राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा की रीढ़ है।

शिक्षा, संस्कृति, दान, सामाजिक विकास, मानवाधिकार के क्षेत्र में प्रवासी भारतीयों का योगदान वैश्विक स्तर पर काफी सराहनीय है। कारगिल युद्ध, उड़ीसा के चक्रवात, महाराष्ट्र तथा गुजरात के भूकम्प के समय इनके द्वारा आर्थिक एवं मेडिकल सुविधाओं के द्वारा सहयोग प्रदान किया गया। वर्ष 1990 के आर्थिक संकट के समय में भारतीयवासी समुदाय ने रिसर्जेट इण्डिया ब्राण्ड जैसे अनेक प्रकार के ब्राण्डों के द्वारा अपने आर्थिक संसाधनों से भारत की आर्थिक मदद की। पोखरन परमाणु परीक्षण के उपरान्त अनेक प्रकार के ब्राण्डों के द्वारा अपने आर्थिक संसाधनों से भारत की आर्थिक मदद की।

वर्तमान सरकार भारत के विकास एवं वैश्विक उभार के लिए भारतीय प्रवासियों के महत्व को बखूबी समझ रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्व के सरकारों की नीतियों कस भारतीय डायस्पोरा के प्रति और विस्तार किया है। उन्होंने डायस्पोरा राजनीति को भारतीय विदेश नीति का हिस्सा बनाते हुए अपनी यात्राओं के दौरान विदेशों में प्रवासी समुदाय को सम्बोधित करने का कार्यक्रम तैयार किया है। संयुक्त राष्ट्र के 'कृषि विकास कोष' द्वारा जारी की गई वर्ष 2017 की रिपोर्ट के अनुसार प्रवासी भारतीयों ने वर्ष 2017 के दौरान भारत में 62.7 अरब डालर अर्थात 4057 अरब रुपये की धनराशि भारत भेजी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में 21–23 जनवरी 2019 तक प्रवासी भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में 75 देशों के करीब 8 हजार प्रतिनिधि शामिल होंगे।

वर्तमान में भारतीयप्रवासियों की विविधता पहले से कहीं अधिक है। आयरलैण्ड जैसे देश के प्रधानमंत्री भारतीय मूल के रहे हैं। कनाडा अमेरिका की सरकार में भारतीय मूल के कई मंत्री रहे है। इसके अलावा लाखो लोग विश्व के लगभग प्रत्येक देश में विविध कार्यों में योगदान देते हैं। यदि भारत सरकार तथा प्रवासियों के बीच आपसी समन्वय और विश्वास अधिक बढ़ सके तो दोनों को लाभ होगा।

संदर्भ

दूबे, अजय (2003) *इण्डियन डायस्पोराः दी ग्लोबल आइडेन्टिटी,* न्यू डेलही, कलिंग पब्लिकेशन्स

कपूर, देवेश (2010) *डायस्पोरा, डेवलपमेंट एण्ड डेमोक्रेसी, दी डोमेस्टिक इम्पैक्ट आफ इण्टरनेशनल माइग्रेशन फ्राम इण्डिया,* न्यू देलही, आक्सफोर्ड प्रेस

साहू, ए0के0 (2012) *इण्डियन डायस्पोरा एण्ड ट्रान्सनेशनलिज्म,* जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स

वर्ल्ड फोकस प्रवासी भारतीय विशेषांक जनवरी 2015